भारत के महानहिम राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में बुद्धिजीवियों व वरिष्ठ साहित्यकारों की उपस्थिति में विशेष रूप से सम्मानित
भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा विशेष रूप से पुरस्कृत

मयख़ाना

समर्पण

उस साकी को
जिसका जाम पीकर
यह बेजान कलम
अनायास ही
कागज के सीने पर
मचल
उठी है।

लेखक

लो ! ले आया दो हाथों में
छल-छल करता पैमाना।
जितना चाहो मांगो पी लो
छोड़ो अब यूं शरमाना।
प्यास बुझाने को जीवन की
इक पैमाना काफी है,
बच्चे, बूढ़े सबकी खातिर
खोल दिया है मयख़ाना।

यूं तो कोई भी आ जाये
सबका सांझा पैमाना।
मिले एक-सी मदिरा सबको
क्या अपना क्या बेगाना।
पर केवल आने जाने में
लुत्फ कहां आ पाता है।
लुत्फ उठाना चाहो तो
अपनाना होगा मयख़ाना।

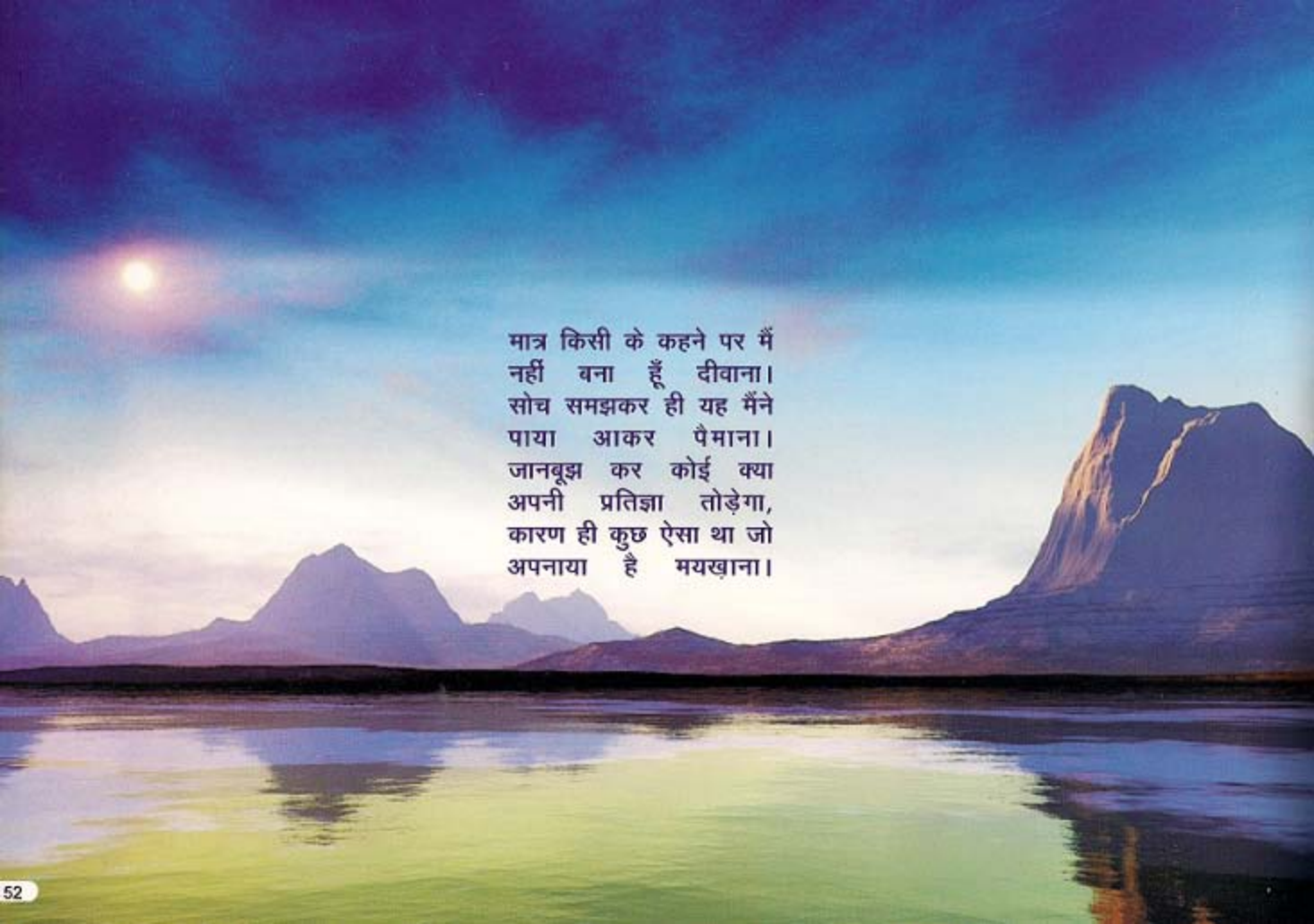
मात्र किसी के कहने पर मैं
नहीं बना हूँ दीवाना।
सोच समझकर ही यह मैंने
पाया आकर पैमाना।
जानबूझ कर कोई क्या
अपनी प्रतिज्ञा तोड़ेगा,
कारण ही कुछ ऐसा था जो
अपनाया है मयख़ाना।

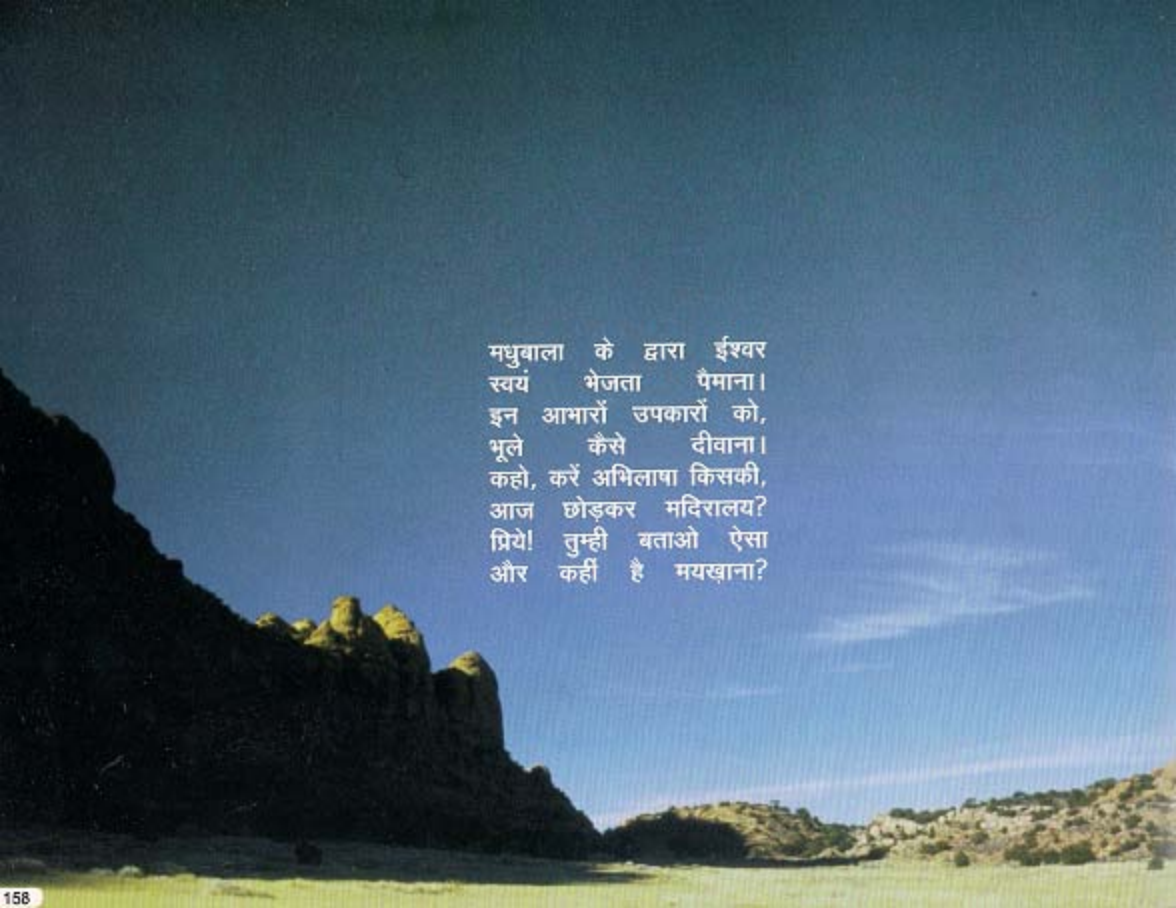
मधुबाला के द्वारा ईश्वर
स्वयं भेजता पैमाना।
इन आभारों उपकारों को,
भूले कैसे दीवाना।
कहो, करें अभिलाषा किसकी,
आज छोड़कर मदिरालय?
प्रिये! तुम्ही बताओ ऐसा
और कहीं है मयख़ाना?

मिले मुझे प्रत्येक जन्म में
साकी! तेरा पैमानः
जन्म किसी भी रूप में लूं, पर
बनूं हमेशा दीवाना
फिर-फिर जन्मू-मरूं मैं लेकिन
संग तुम्हारा ना छूटे
जन्म मरण से छूट गया तो
कहां मिलेगा मयखाना।

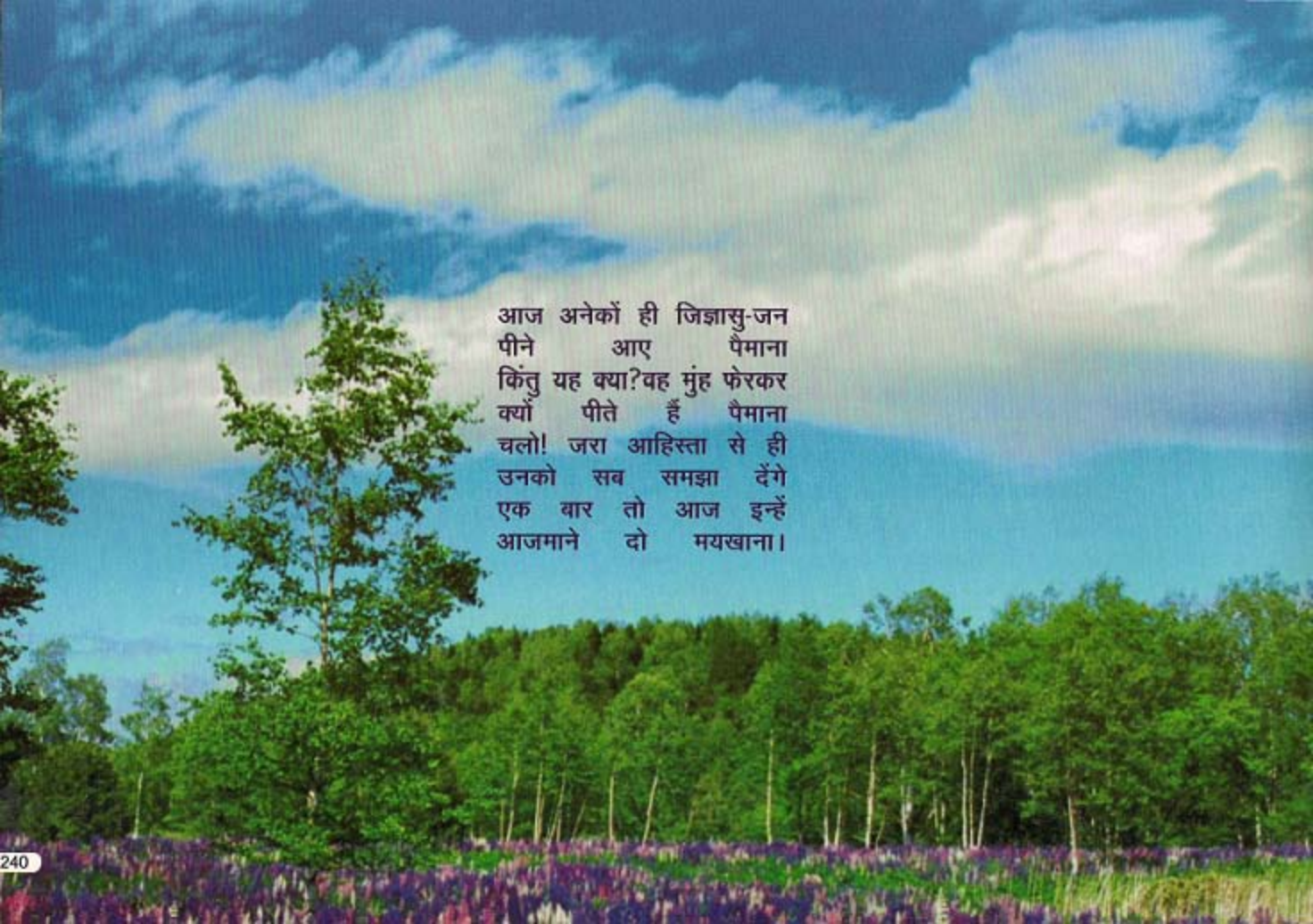
आज अनेकों ही जिज्ञासु-जन
पीने आए पैमाना
किंतु यह क्या?वह मुंह फेरकर
क्यों पीते हैं पैमाना
चलो! जरा आहिस्ता से ही
उनको सब समझा देंगे
एक बार तो आज इन्हें
आजमाने दो मयखाना।

मन मधुबन से चुन-चुन कलियां
आज बनाया पैमाना।
रचूं सुनहले सुन्दर सपने
रातों को मैं दीवाना।
अरमानों की चिता जलाई
त्याग किया जाने कितना,
नींद गँवाई आंखों की, तब
लिखा गया यह मयख़ाना।

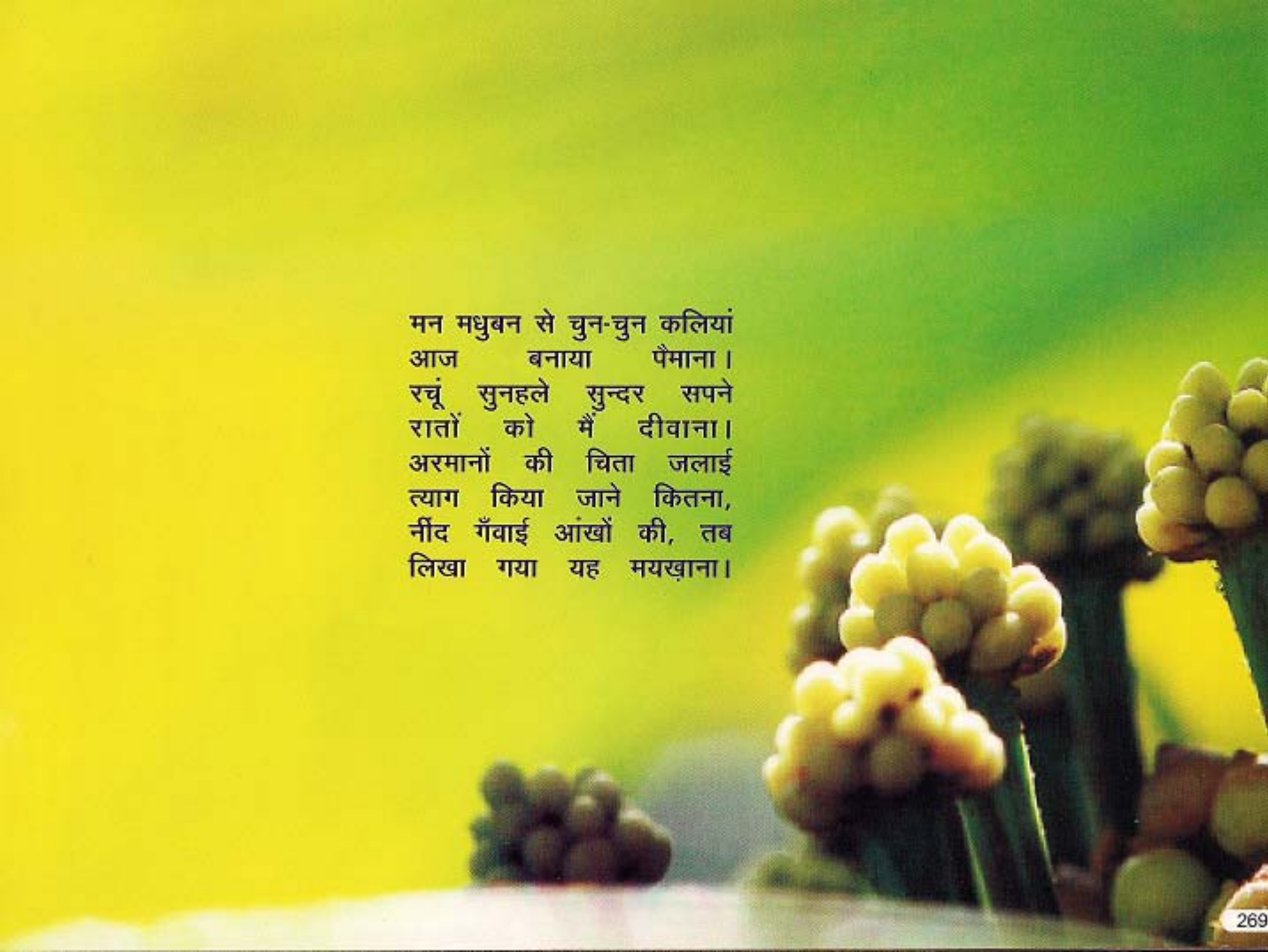

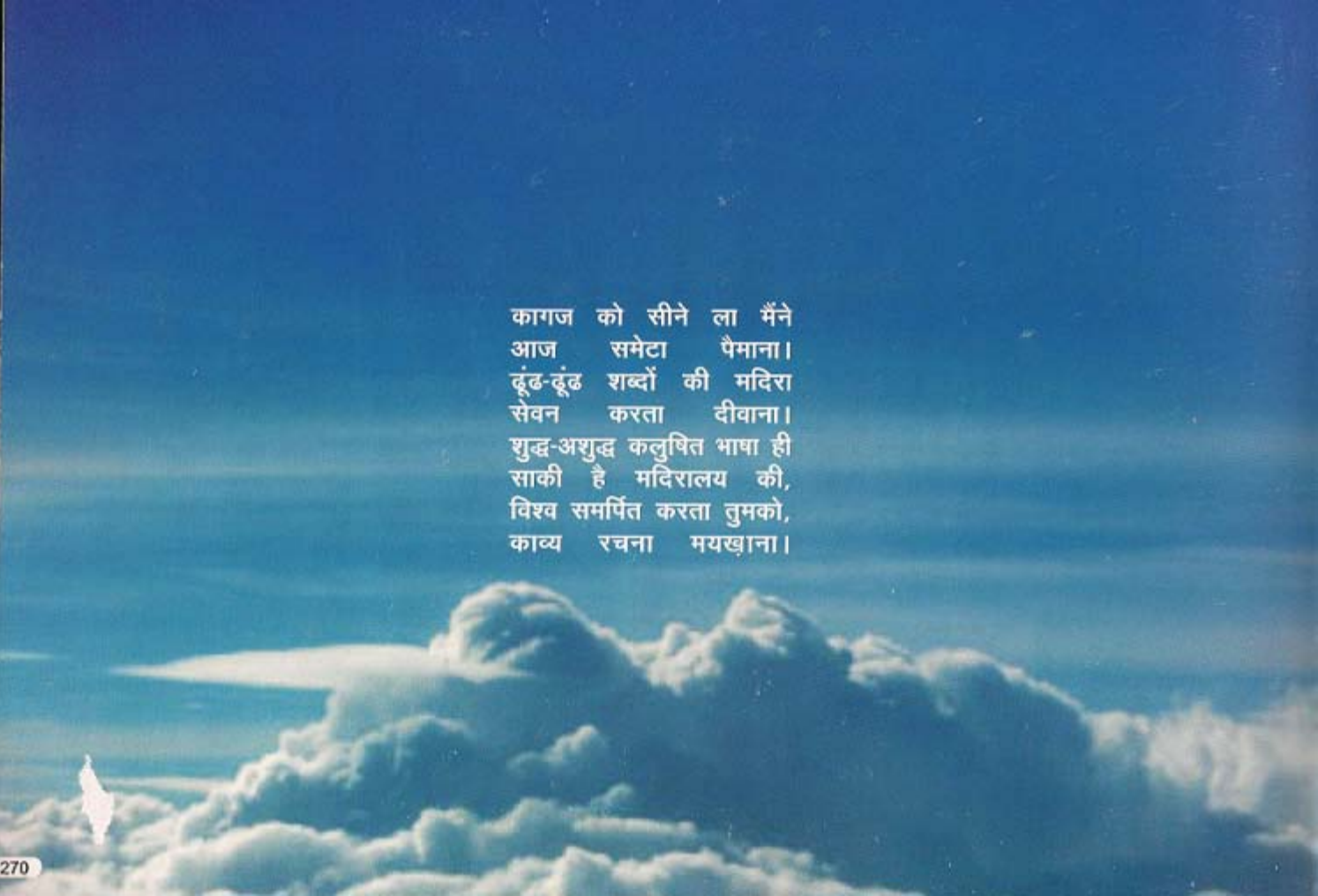
कागज को सीने ला मैंने
आज समेटा पैमाना।
ढूंढ-ढूंढ शब्दों की मदिरा
सेवन करता दीवाना।
शुद्ध-अशुद्ध कलुषित भाषा ही
साकी है मदिरालय की,
विश्व समर्पित करता तुमको,
काव्य रचना मयख़ाना।